RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 45 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 13 अप्रैल 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

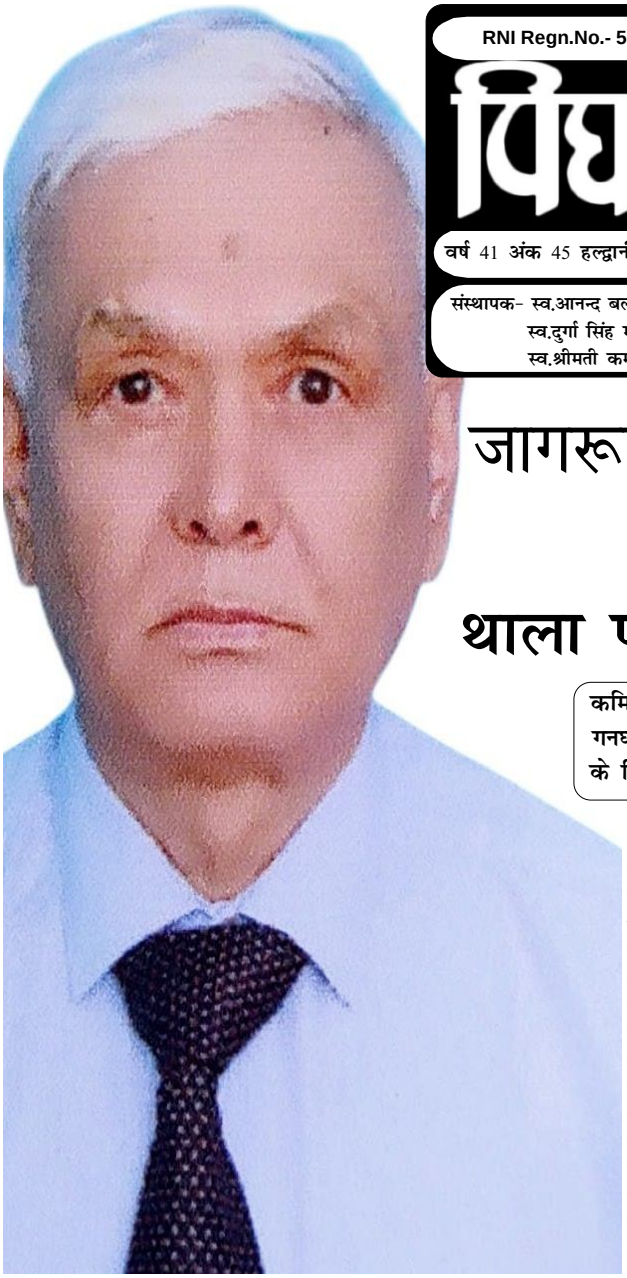

जागरूकता से ही संस्कृति बचती है

नेत्र सिंह गनघरिया से बातचीज

थाला पूरी तरह आबाद किया गया था

कमिश्नर विलयम ट्रेल ने गनघर को आबाद करने के लिये प्रोत्साहित किया

हुणिया मित्र अपने जानवरों के साथ आ रहे थे तभी पाछूगाड़ में छलांग लगा दी

माँ नन्दादेवी गनघर धार्मिक ट्रस्ट अपनों को जोड़ने की पहल है

कार्यालय प्रतिनिधि

अपनी संस्कृति को बचाने के लिये केवल जमावड़ा करना पर्याप्त नहीं है, इसके लिए जागरूकता ही उपाय है। जागरूकता से ही संस्कृति बचती है। इसी धारणा के साथ चिन्तन-मनन और व्यवहार में लाने वाले डॉ.नेत्र सिंह गनघरिया के साथ बातचीत पर आधारित है पिघलता हिमालय का यह अंक। बातचीत में रोचक जानकारियों से पहले श्रीमान गनघरिया के बारे में जान लेते हैं- इतिहास बताता है कि गढ़वाल से इनकी आवत हुई। इनके पूर्वज कुंवर राजपूत थे। परगना सगरी ग्राम के बधान में रहने वाले धनु के दो लड़के माछू और धौलिया जो नन्दादेवी के उपासक थे। दोनों रहते हुए पूजा-पाठ में रत रहते थे लेकिन एक व्यक्ति उन्हें बराबर व्यवधान करता था, उनकी पूजा में बिघ्न करता। ऐसे में उन कुंवर भाईयों ने धनुष उठाया और उसे मार डाला। पकड़े जाने भय से राजा बाजबहादुर के समय यह भाई जोहार घाटी के मिलम में आ गए। मिलम में रहते हुए कुछ समय ही इन्हें हुआ था, मिलम वासियों ने कहा- आप पांछू जाकर रहो। इसके बाद एक भाई धौलिया बिल्जू गया जिन्हें 'दास्पा' और एक भाई गनघर गया जिन्हें 'गनघरिया' कहा गया। स्थान के अनुसार कुल नाम हुआ करता था। ब्रिटिश काल में कुमाऊँ के द्वितीय कमिश्नर विलयम ट्रेल जब अपने दौरे में इस सीमान्त क्षेत्र में आए तो उन्होंने गनघर को आबाद करने के लिये प्रोत्साहित किया। मौसम के हिसाब से माइग्रेसन करने वाले परिवार ने गनघर, घोरपट्टा और थाला में अपने रहने की व्यवस्था की। चौकोड़ी से काण्डा-बागेश्वर जाते समय हुदुमधार के पास है- थाला। पहाड़ के पीछे ढलान पर यह ग्राम गनघरिया परिवारों ने अपने लिये उपयुक्त माना और अक्टूबर माह से मार्च तक थाला में रहने लगे। थाला में अभी हाल भी कुछ परिवार रहते हैं।

गनघरियाओं के इसी कुनबे में एक हुए- हरमल सिंह। इनके पुत्र हुए- बाला

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

तत् त्वमसि के प्रथम प्रणेता उद्दालक आरुणि

सूर्यकान्त बाली

एक सवाल पाठकों के मन में अब तक उठ चुका होगा। यह कि ऐसा क्या हुआ कि महाभारत के बाद से मन्त्रों की रचना बन्द हो गई और अचानक अध्यात्मवाद ने सारे समाज को अपने आगोश में ले लिया? जरा नोट करें। महाभारत से पहले के नाम हैं। विशिष्ट मन्त्रकारों के- दीर्घतमा, कवण ऐलूष, सूर्या सावित्री और ऐसे ही अनेक ऋषि। यहाँ तक कि जो नई परम्परा वाल्मीकि ने अपने रामायण प्रबन्धकाव्य के रूप में डाली उसका अनुकरण भी कहीं हजार साल बाद जाकर वेदव्यास ने महाभारत के रूप में किया और इन हजार वर्षों में बीते दो हजार वर्षों की तरह मन्त्र रचना अनवरत होती रही। पर महाभारत के बाद के नाम हैं गार्गी, याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, श्वेतकेतु, नचिकेता, अष्टावक्र या उद्दालक आरुणि। अचानक यह परिवर्तन कैसे हो गया? तीन हजार सालों की अनवरत मन्त्र रचना का स्थान अध्यात्म सम्वादों, वैचारिक सेमिनारों और ब्रह्मचिन्तन ने कैसे ले लिया?

एक बहस अक्सर भारत के विद्वानों में चलती है। बहस यह है कि वेदों में दो तरह के विचार मिलते हैं-यज्ञ सम्बन्धी और दर्शन सम्बन्धी। आगे चलकर यज्ञ सम्बन्धी विचारों का विन्यास शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण जैसे ब्राह्मण ग्रन्थों में हुआ तो वेदों के अध्यात्म सम्बन्धी सूत्रों को उपनिषदों ने थाम लिया। यह आकलन अच्छा लगता है। पर इसमें से फिर वही हमारा प्रश्न झाँक रहा है कि क्यों महाभारत पावर्ती बुद्धिजीवियों ने मन्त्र रचना का दामन छोड़ दर्शन परम्परा पर ज्यादा जोर दे दिया? इस हद तक कि जिन ब्राह्मण ग्रन्थों को यज्ञों का प्रतिपादक माना जाता है, उनमें भी उपनिषदों और दार्शनिक विचारों को जोड़कर महाभारत पावर्ती अध्यात्म धारा में डुबो दिया गया है।

अगर हम वास्तव में देवी का गुणगान करने वाली मन्त्ररचना के भारत को ब्रह्म और आत्मा पर चिार करने वाले भारत में ही हो गए रूपान्तरण का कारण जानना चाहते हैं तो हमें महाभारत पर एक नए सिरे से नजर डालनी होगी। महाभारत युद्ध में अठारह अक्षौणिही सेना मारी गई थी और देश की समस्त शौर्य सम्पदा का उसमें निर्मम विनाश हो गया था। आपको लगे हाथ विनाश की मात्रा से परिचित करवा दिया जाए। एक अक्षौहिणी सेना में 21870 रथ, 21870 हाथी, 109350 पैदल होते हैं। इस देश के महाभारत नामक भयानकतम युद्ध में इस तरह की अठारह अक्षौहिणियाँ नष्ट हुई हैं। यानी करीब बीस लाख सैनिक इस युद्ध में मारे गए थे और दस लाख के लगभग घोड़े, तीन लाख से ऊपर हाथी और इतने ही रथों का इस युद्ध में विनाश हुआ था जिस युद्ध को पश्चिमी शोधकर्ता एक गली की लड़ाई कहकर मजाक में या दो कबीलों का युद्ध कहकर अपने अज्ञान में उड़ा देना चाहते हैं, इस युद्ध की वास्तविकता यह थी। विनाश की मात्रा यह थी।

इससे दो निष्कर्ष निकलते हैं। एक यह कि इतना विराट युद्ध सिर्फ वही समाज लड़ सकता है जो आर्थिक और वैज्ञानिक उन्नति के शिखर पर पहुँचा हुआ हो और इस वजह से जो अहंकारऔर सत्ता लिप्सा का भयानक शिकार हो चुका हो। आप महाभारत पड़ जाइए, आपको दोनों बातों के प्रमाण पग पग पर मिल जाएंगे। दूसरा निष्कर्ष यह निकलता है कि इस कदर भयानक रक्तपात के बाद, मानव जीवन के इतने निर्मम संहार के बाद जीवन के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आना लाजमी है और वह बदलाव हमें महाभारत-परवर्ती अध्यात्म सम्वादों की बहुलता में नजर आता है। अब भला देवताओं को काल्पनिक स्मृतियों में मन्त्र रचकर क्या मिलने वाला था? बहुत हो चुका था यह सब। देश के विचारकों को अब नए सिरे से सोचने की विवशता अनुभव हुई। जीवन और जीवन से पार के जगत के बारे में खूब बहस करने को मन किया और इस सब का परिणाम था वे गोष्ठियाँ और सम्वाद जिनमें अध्यात्म पर बहस हुआ करती थी। महाभारत को लेकर अब तक जितना भी विचार व चिन्तन हुआ हो, परवर्ती समाज के व्यवहार और दृष्टिकोण पर पड़े उसके असर का विवेचन हम नए जमाने के होने का दावा करने वाले भारतीयों ने नहीं किया है, यह हमारी तथाकथित आधुनिकता पर एक विपरीत टिप्पणी है। आज हमने एक पक्ष की ओर संकेत किया हे। सामाजिक रिश्तों की अवधारणा पर एक भयानक महासंग्राम का क्या असर पड़ा, इस पर अगली बार के आलेख में करेंगे, यह भी संक्षेप में संकेत मात्र ही।

इसी से जुड़ा एक और पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। इस देश में मन्त्र रचना का प्रारम्भ पूर्व में हुआ (न कि पश्चिमी भारत में, जैसा कि पश्चिमी शोधकर्ता हमें आज तक बरगलाते रहे हैं।) यज्ञ का प्रवर्तन मनु ने किया जो अयोध्या के राजा थे। फिर उन्हीं की प्रेरणा से यजुषों की रचना पूर्वांचल में हुई। प्रथम ऋचाकार विश्वामित्र ने गायत्री मन्त्र की रचना की, वे भी कान्यकुब्ज

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

समय रहते सख्त कदम जरूरी

उत्तराखण्ड में अराजक तत्वों व अपराधियों के हौंसले बढ़ते जा रहे हैं। सरकार दावा कर रही है कि अपराध मुक्त प्रदेश बन रहा है और पुलिस अपनी मुस्तैदी का बखान कर रही है लेकिन प्रदेश में जिस तरह से अपराध की ग्राफ आगे जा रहा है वह चिन्ता की बात है। इसके लिये समय रहते सख्त कदम जरूरी है। यह कदम शासन-प्रशासन के अलावा समाज द्वारा भी उठाया जाना चाहिये। साथ ही सूझबूझ दिखानी होगी, कहीं ऐसा न हो कि बिना बजह कोई मामला भड़के और राजनीतिक रोटियां सेकी जाएं।

प्रदेश में नियमित अन्तराल में जिस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं उससे कानून-व्यवस्था पर गम्भीर सवाल होते हैं। देवभूमि अन्य राज्यों के बदमाशों, खनन माफियाओं, अपराधियों की शरणस्थली भी बनती जा रही है जबकि सरकार बार-बार भयमुक्त राज्य की बात करती है। देवभूमि में जिस प्रकार का अपराध-ताण्डव बराबर हो रहा है वह बेचैनी बढ़ाने वाला है। सोशल मीडिया पर दिन-रात अनाप-सनाप माहौल बनाने में कतिपय महिलाओं का हाथ ज्यादा है। सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी में कुछ समय पहले ही हरियाणा के डाक वितरण करने वाले तीन युवकों द्वारा बालिका को बहकाने का मामला प्रकाश में आया था, अब गणाई गंगोली में भी हरियाणा के पोस्टमैन द्वारा बालिका को भगाने, बेरीनाग में तीन बच्चों की मां को अपने 30 वर्षीय फेसबुक मित्र से प्यार हो गया और वह हरिद्वार भागने लगी, जिसे पुलिस ने पकड़ा। देहरादून की सड़कों पर आये दिन कुछ न कुछ बबालबाजी चिन्ता की बात है। नशे में धुत्त युवक-युवतियों के वीडियो सोशल मीडिया पर साफ बता रहे हैं कि माहौल कितना खतरनाक होता जा रहा है। राजपुर रोड क्षेत्र में सुबह की सैर पर जा रहे ब्रिगेडियर की फायरिंग में जान चली गई। कार में पीछा कर रहे बदमाशे सरेआम फायरिंग करते हुए जा रहे थे। सफेदपोशों के संरक्षण में माफिया खनन और वसूली का काम कर रहे हैं। ऐसे में कौन सुरक्षित है? और कैसा भविष्य तैयार हो रहा है?

इन सारे हालातों पर पूरे समाज को जागरुकता दिखानी होगी। कानून व्यवस्था बनी रहे इसके लिये सख्त कदम उठाने जरूरी हैं।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर गहरा संकट

ईरान में जारी युद्ध के बीच वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति धुरी होर्मुज स्ट्रेट के एक माह से अधिक रुक जाने से दुनिया सम्भावित बड़े ऊर्जा संकट पर आ गई है। शिपिंग विशेषज्ञ लार्स जेन्सेन व अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के प्रमुख फातिह बिरोल ने चेताया कि मौजूदा हालात 1970 के दशक के तेल संकट से भी बड़े आर्थिक जोखिम में बदल सकते हैं।

आईटी मंत्री की चेतावनी

नयी दिल्ली। आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने साफ किया है कि भारत में प्रोडक्ट डिजायन और क्वालिटी पर निवेश नहीं करने वाली कम्पनियों को ईसीएमएस स्कीम का सरकारी फण्ड नहीं मिलेगा। साथ ही सिक्स सिग्मा मानक पूरे नहीं करने पर उन्हें योजना से ही बाहर किया जा सकता है।

पाकिस्तान के विदेश मंत्री खुश

इस्लामाबाद। पाकिस्तान जल्द ही ईरान और अमेरिका के बीच मध्यस्थता की मेजबानी करने को तैयार है। विदेश मंत्री एवं उप प्रधानमंत्री इशाक डार ने कहा हम खुश हैं, ईरान और अमेरिका ने मध्यस्थता के लिये चुना। इसको लेकर मिस्र, सऊदी अरब और तुर्की के शीर्ष राजनयिकों के साथ बातचीज हुई है।

दमन के लिये पूर्व सीडीओ गिरफ्तार

काठमाण्डू। नेपाल में गत सितम्बर में हुए जेन-जी आन्दोलन के दमन में कथित भूमिका के लिए काठमाण्डू के पूर्व मुख्य जिला अधिकारी (सीडीओ) छवि रिजाल को गिरफ्तार कर लिया गया है। पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और तत्कालीन गृह मंत्री रमेश लेखक पहले ही गिरफ्तार हो चुके हैं।

भारतीय व्यापार प्रतिनिधि मण्डल चीन में

बीजिंग। भारतीय वाणिज्य मण्डलों का एक प्रतिनिधि मण्डल 5 साल के गतिरोध के बाद चीन दौरे पर है। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली वाणिज्य व उद्योग मण्डलों का यह दल चीन के सबसे अधिक औद्योगिक क्षेत्रों में से एक जियांग्यू प्रान्त का दौरा करेगा।

जापान ने लम्बी दूरी की मिसाइलें तैनात की

टोक्यो। जापान की पहली लम्बी दूरी की मिसाइल दक्षिणी-पश्चिमी सेना शिविर में तैनात की गई है। जापान अपनी आक्रमण क्षमताओं को मजबूत करने में जुटा है। इसी क्रम में उसने चीन तक मार करने वाली पहली मिसाइल तैनात की।

फसक

दाज्यू, धपोड़ाधपोड़ और सपोड़ासपोड़ होने वाली ठैरी

चुनाव से पहले फनफनाट-गनगनाट होती रहती है बल

दाज्यू, गाँव में सब ठीक ही चल रहा है, धूनी में जोगी बाबा रमा है और बुतका अतर की तलाश में घूमते रहते हैं। रतुआ अमा जम्बू-गन्द्रायणी की ही बात करती है। उनके हाथ का बना भटिया-जौला सपोड़ने का मजा ही कुछ और है। दाज्यू, सोशल मीडिया में जिस प्रकार से भयंकर भयंकर बड़े लोगों के चित्र-वीडियो दिखाए जा रहे हैं उसकी गन्ध से हर हाड़मांस वाले से डर लगने लगा है। महाराष्ट्र की महिला आयोग की मैडम का चलचित्र बताया जा रहा है। जोर-जोर से गाना बज रहा है- 'दय्या पी गए सारा-रा-रा-सारा'। यह सब भी तो सपोड़ासपोड़ ठैरी। रुद्रपुर में व्यापारी को बन्धक बनाकर कपड़े उतारकर वीडियो बनाने पर दो आरोपियों को पुलिस ने पकड़ लिया है बल। दाज्यू, किसी युवती ने मिलने के लिये पहले बुलाया फिर उसके साथियों ने व्यापारी को पकड़ कर नंगा कर दिया बल। पता नहीं कैसा जो हो रहा है दुनिया में और क्यों फंसने वाले फंस रहे हैं। गणाई गंगोली में हरियाणा का पोस्टमैन बालिका को भगा ले गया। इससे पहले मुनस्यारी के समकोट में भी ऐसा कुछ हो रहा था लेकिन सूझबूझ से मामला सपड़ गया बल। रामनगर के एक गांव में पिता ने बेटी से दुष्कर्म कर डाला। पहली पत्नी से जन्मी बेटी के साथ हैबान बने पिता को पुलिस ने पकड़ लिया है।

दाज्यू, पार्टी वाला नेता गज्जू दिल्ली जाकर दूसरी पार्टी का झण्डा बोक कर ला रहा है। चुनाव से पहले फनफनाट गनगनाट होती रहती है बल। जिसके मन की नहीं हुई वह दूसरे में मिल जाने वाला हुआ। बांकी तो जनता जाने उसने क्या करना है। जनता की भी क्या कहो..... उसने भी धपोड़ाधपोड़ और सपोड़ासपोड़ करनी ठैरी। वोटिंग वाले दिन तक कैसा जो माहौल होगा क्या कहा जा सकता है। छोटे-बड़े नेताओं का गनगनाट-फनफनाट खूब हो रहा है।

पटरी पार वाले कालेज में प्रोफेसर बुलरुवा ने हाहाकार मचा रखा है बल। मार्च तक हिसाब बनाकर मटकी फोड़ने में किसी ने कोई कसर नहीं छोड़ी। टीए-डीए के बिल में कलमी कबाब, हांडी चिकन, रोटियों का ढेर और पता नहीं क्या-क्या लिखा था। यहीं नन्दलाल भी बिल-बाउचर लेकर डोलता रहता है। उसका कहना है- 'उत्तराखण्ड में कोई दम नहीं है। जरूरत पड़ी तो अपने गाँव से चचेरे-तहेरे बुलवाकर ढेर करवा दूंगा। अखिलेश यादव से कहने भर की देर है। सारा वृन्दावन भी अपना है। रात भर लड्डू भोंग लगाए हैं।' दाज्यू, हमारी समझ में न तो प्रोफेसर बुलरुवा आया और न ही नन्दलाल। इतना ही दिखाई दे रहा है कि इनकी गनगनाट होती रहती है और मौका मिलते ही सपोड़ासपोड़ करने लगते हैं। देश-प्रदेश कैसे जो तरक्की करेगा जब इसको पत्तल की तरह चाटने वाले फनफनाट कर रहे हैं। इस रगड़घूस में कोई बैर भी तो नहीं लेना चाहता है। सबका दिल धड़कता है लेकिन धक-धक सुनने वाला कौन जो है? सारे के सारे 2027 के चुनाव के लिये सज-संवर रहे हैं। इस संवरने में लगे हाथ हड्डी-कबबा-कुरमा-दहीबड़ा भी मिले तो सपोड़ासपोड़ करने वाले रेंग रहे हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

जागरूकता से ही.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

सिंह, कुन्दन सिंह, विशन सिंह, महिमन सिंह और गोकर्ण सिंह। परिवार की शाखाएं काफी फैली हैं। फिर बाला सिंह के सुपुत्र हुए- नेत्र सिंह और राजेन्द्र सिंह। इनकी अगली पीढ़ी की बात करें तो डॉ.नेत्रसिंह के पुत्र- सुजीत और पुत्री नीता हैं जबकि श्रीमान राजेन्द्र सिंह की पुत्रियां किरन, पूजा और पुत्र पंकज सिंह हैं।

पारिवारिक तानेबाने के बाद डाक्टर गनघरिया साहब के बचपन की ओर झांके तो पता चलता है 22 दिसम्बर 1950 को थाला में इनका जन्म हुआ। पधानचारी के परिवार में जन्म लेने वाले नेत्र सिंह, राजेन्द्र सिंह का लालन-पालन साधारण पृष्ठभूमि में हुआ। बचपन की पढ़ाई कमेड़ीदेवी से करने के बाद यह मुनस्यारी चले गये। बचपन के दिनों को याद करते हुए नेत्र सिंह जी बताते हैं- पढ़ने के साथ पाटी लेकर जाते और पाटी में घोटा लगाते हुए उसे दूसरे साथियों की पाटी से ज्यादा चमकदार बनाने का सब साथियों के लिये अनमोल क्षण होता। विद्यालय में छुट्टी से पहले गिनती, पहाड़े जोर-जोर से समूह में पढ़ते, जो सबको याद हो जाता। मुनस्यारी इण्टर कालेज के बाद अल्मोड़ा से बीएससी इन्होंने की और एमएससी करने नैनीताल चले गये। इस बीच कानपुर में एमबीबीएस करने के बाद पैरामिलीट्री फोर्स, बीएसएफ में चिकित्साधिकारी, सहायक कमाण्डेंट के पद पर इनका चयन हुआ लेकिन अपनी उन मीठी यादों के साथ हमेशा अपने संस्कारों में बंधे रहे। इन्होंने 31 साल तक फौजी परिवेश में विभिन्न जगहों, पदों पर अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा एवं सफलता पूर्वक निर्वहन किया। इसके लिये इन्हें 26 जनवरी 2003 में राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया। झेमू हरपाल राठ में गोविन्द सिंह पांगती की सुपुत्री तारा देवी से इनका विवाह हुआ। श्रीमती तारा भी सांगीतिक और साहित्यक अभिरुचि रखती हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. एन.एस.गनघरिया को बीएसएफ ग्वालियर की अकादमी कम्पोजित अस्पताल में सेवा का अवसर मिला। पूर्वोत्तर में अरुणाचल, असम, मेघालय, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, त्रिपरा, सिक्किम सहित तमाम जगह इन्हें सेवा के दौरान जाने का अवसर मिला। बांग्लादेश सीमापर पर सिलचर में इनकी पहली पोस्टिंग रही। जनवरी 2011 में सी.आई.एस.एफ. के निदेशक(मेडिकल) के पद से सेवानिवृत्त होकर इन्होंने हल्द्वानी में अपने परिवार के साथ रहना तय किया और जिस स्थान पर यह रहते हैं उसे हिमालय कालौनी के नाम से जाना जाता है। अपनी कालौनी को व्यवस्थित रूप देने से लेकर अपने मूल ग्राम तक की स्थितियों पर चिन्तनशील रहने वाले एन.एस.गनघरिया कहते हैं- 'हमारा ग्राम गनघर नैसर्गिक सुन्दरता से परिपूर्ण है। इसके उत्तर पश्चिम में नन्दादेवी है। वहीं पास पांछू गाढ़ का मनोरम दृश्य दिखता है। दक्षिण में मापा और पूर्व में बिल्जू ग्राम है। प्राकृतिक रूप से इसकी सीमाएं निर्धारित हैं। अब बुर्फू से गनघर ग्राम तक प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अन्तर्गत सड़क बन रही है। अब मुनस्यारी से गनघर जाना आसान हो जाएगा।

अपनी पुरानी यादों का जोरदार किस्सा वह बताते हैं- 'तिब्बत से आने वाले हुणिया मित्रों का दल आ रहा था और हम लोग गनघर से देख रहे थे, पाछू गाड़ पर अस्थायी पुल से हुनिया लोग अपने हुनकारा के साथ आ रहे थे अचानक एक भेड़ ने पाछू गाड़ छलांग लगा दी, उसके बाद एक के बाद एक भेड़ छलांग लगाने लगे। गनघर से गये युवकों ने नदी में डूब चुकी भेड़ों को निकाला।' गनघर और अपने बुजुर्गों से जुड़ी यादों को चिरस्थाई रखने के लिये इन्होंने हाल ही में माँ नन्दादेवी गनघर धार्मिक ट्रस्ट को बनाया है। इसका उद्देश्य अपनों को जोड़ने की पहल सहित पर्यावरण संरक्षण है। गनघर में नाग मन्दिर भी है जहाँ नाग देवता को पूजा जाता है। गोरखनाथ मन्दिर सहित स्थानीय शक्तियों के मन्दिर हैं। समय के साथ बदलाव होता रहता है लेकिन समय के साथ अपनी धरोहरों को बचाए रखने की शानदार पहल करने वाले डॉ.गनघरिया अपने काज में सफल हों यही कामना है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

स्व.गोकुल सिंह बृजवाल मेमोरियल सोसाइटी

दुर्गा जंगपांगी, चेतनराम, लीलादेवी हिमतीदेवी सम्मानित, सौरभ को सराहा

मुनस्यारी। गंगोरीसेन तल्ला दुम्मर में स्व. गोकुल सिंह बृजवाल मेमोरियल सोसायटी का स्थापना आयोजन धूमधाम के साथ हुआ। दुम्मर प्रा.स्कूल के शिक्षक व लेखक जगदीश सिंह बृजवाल के सरकारी सेवाकाल में सेवानिवृत्ति के आयोजन के उपरान्त उन्होंने अपने पिता स्व.गोकुल सिंह जी की स्मृति में सोसायटी आयोजन का दृढ़ निश्चय किया था। आयोजन का मंच संचालन अध्यापक हीरा सिंह धींगा द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम स्व. गोकुल सिंह बृजवाल के चित्र पर माल्यार्पण तथा लोक-संस्कृति शुगनगीत के प्रस्तुति के पश्चात मुख्य अतिथि विधायक हरीश सिंह धामी ने सोसायटी का शुभारम्भ किया।

सभा में उपस्थित सम्मानित प्रबुद्धजनों ने अपने-अपने व्याख्यान भाषण में सुझाव, टिप्पणी से भविष्य की सफलता पर अपने विचार व्यक्त किये, जिसमें मल्ला जोहार समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, जोहार क्लब मुनस्यारी के अध्यक्ष श्री केदार सिंह मर्तोलिया, डीडीहाट जिला कांग्रेस अध्यक्ष मनोहर टोलिया, व्यापार संघ अध्यक्ष प्रमोद द्विवेदी आदि गणमान्य प्रतिनिधियों द्वारा अपने-अपने विचार व्यक्त करने के साथ समाजोत्थान, जनकल्याण , समाज सेवा भाव की सभी न प्रशंसा की।

आयोजन कर्ता व्यवस्थापक जगदीश सिंह बृजवाल ने इस गैर लाभकारी संगठन के सभी बिन्दुओं पर प्रकाश डालते भविष्य में सफलता का दृढ़ संकल्प, प्रतिबद्धता से दोहराई और कहा कि प्रतिभाओं को अवसर देने के लिये वह हमेशा आगे रहेंगे। उन्होंने सभी से अपनी संस्कृति के लिये जुटने को कहा। समारोह में ग्राम पंचायत के प्रधान पंकज सिंह बृजवाल, महिला मंगल दल तल्ला दुम्मर, मल्ला दुम्मर नवयुवक मंगल दल के द्वारा भी अपने विचार प्रेषित किए तथा अच्छे कार्य को कार्यान्वित किए जाने पर सदैव सहयोग किए जाने हेतु भविष्य के लिए आशान्वित किया। इस मौके पर परम्परागत वेशभूषा में बड़ी संख्या में क्षेत्रवासी उपस्थित थे। कार्यक्रम में गाँव के अपने बुजुर्गों को सम्मानित किया गया। विशिष्ट विशेषता, योग्यता, उपलब्धि, आदर्श जीवन, अपने लम्बी सफल जीवन यात्रा नब्बे दशक पार करने वाले दुर्गा सिंह जंगपांगी(92), चेतन राम (84), श्रीमती लीली देबी बृजवाल (93), श्रीमती हिमती देबी बृजवाल (98), श्रीमती हिमती देबी बृजवाल (80) को स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सौरभ सिंह बृजवाल पुत्र श्री राजेन्द्र सिंह बृजवाल (23) को उनकी विशेष उपलब्धि हेतु स्मृति चिन्ह भेंट किया। श्री सौरभ अपनी दक्षता एवं कौशल विकसित कर युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं। कार्यक्रम के अन्त में सोसायटी के व्यवस्थापक जगदीश सिंह बृजवाल ने अतिथियों व सभी उपस्थित जनों का आभार व्यक्त किया।

संस्कृति

पहाड़ की विशिष्ट परम्परा 'भिटौली'

डॉ. मनीषा पाण्डेय

पहाड़ अपनी रीति-रिवाज, परम्परा, उत्सव, मेले, त्यौहार आदि के कारण भी विशिष्ट है। इस विशिष्टता में एक है- 'भिटौली'। प्रतिवर्ष चैत्र के महीने भाई या माता-पिता अपनी विवाहिता बहिनों या बेटियों को उपहार या भेंट देते हैं, जिसे 'भिटौली' कहते हैं। इसमें भाई अपनी बहिन को उपहार स्वरूप नए वस्त्र, दक्षिणा, मिठाई, फल एवं तरह-तरह घरेलू पकवान जैसे- सिंगल, पूरी, खजूरा, सया आदि देता है। इस भेंट को भाई स्वयं लेकर अपनी बहिन के ससुराल जाता है। इस परम्परा में भाई या माता-पिता आदि मायके वालों का अपनी विवाहिता बेटियों या बहनों के प्रति पूर्व प्रेम-भाव अभिव्यक्त होता है। भिटौली की यह भेंट बहिन के के लिए कोई वस्तु मात्र नहीं होती अपितु यह तो उस बहिन की आशा है जो

वर्षभर बाद अपने मायके से भिटौले की यह सामग्री को अपने आस-पड़ोस या पूरे गाँव में बांटने की यह परम्परा आज भी विद्यमान है। भाई द्वारा भिटौली लाने पर बहिन भी उसके लिए तरह-तरह के पकवान बनाती है और अपने भाई को भेंट स्वरूप गोला और मिठाई देकर भिटौली दोहराती है-

चैत चाई मैना
बैनि चाई रौलि
भाई भिटौली ल्यालो,
म्यारा घर आलो
मिठ्या, खजुर भौत चीज ल्यालो
भेटनकि यो आस सदा बनी रौ,
ऊनै रयै भेटने रयै,
भिटोली ल्यूनो रयै,
जी रहे, जाग् रये,
यो दिन यो बार भेटने रयै।

आज भागदौड़ भरी जीवन शैली में भिटौली का स्वरूप भी कुछ बदल गया है। जो लोग अपनी बहिनों के घर नहीं जा पातेवह गूगल-पे या अन्य माध्यम से अपनी बहिनों को भिटौली की दक्षिणा भेज देते हैं किन्तु ग्रामीण अंचलों में आज भी इस परम्परा को पूर्ण रूप से प्रेमपूर्व मनाया जाता है। यह हमारी सर्वश्रेष्ठ परम्परा है जो भाई के कर्तव्य और प्रेम को दर्शाने के साथ-साथ भावनात्मक रिश्तों को और गहरा करती है।

ज्योतिष की बातें- 276

14 अप्रैल 2026 को सूर्य अपनी उच्चराशि मेष में प्रवेश करेगा अत: सूर्य अत्यन्त बलवान रहेगा अत: अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, सम्मान आदि अपने कारक विषयों में कुम्भ, वृश्चिक, कर्क व मिथुन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

17 अप्रैल 2026 को पिछली 36 दिन से अस्त चल रहा शनि मीन राशि में पूर्व दिशा में उदय हो जाएगा अत: अब शनि से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल सामान्य रूप से प्राप्त होंगे ।

18 अप्रैल 2026 को पिछले लगभग पांच महीने से अस्त तक चल रहा मंगल मीन राशि में पूर्व दिशा में उदय हो जाएगा अत: मंगल से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अब सामान्य रूप से प्राप्त होंगे।

19 अप्रैल 2026 को शुक्र स्वराशि वृषभ में प्रवेश करेगा, जिस पर मित्रग्रह शनि की दृष्टि भी होगी। इस समय शुक्र मार्गी भी है और उदय भी, अत: शुक्र अत्यन्त शुभ हो रहा है। अत: अगले 26 दिन शुक्र सांसारिक सुख आदि अपने कारक विषयों में मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, मकर, कुम्भ व मीन राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा।

अक्षय तृतीया- वैशाख शुक्ल तृतीया पूर्वाह्न व्यापिनी तिथि, तदनुसार 19 अप्रैल 2026 को अक्षय तृतीया का पर्व मनाया जाएगा।

परशुराम जयन्ती- वैशाख शुक्ल तृतीया प्रदोष व्यापिनी तिथि के अनुसार 19 अप्रैल 2026 को भगवान परशुराम जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

छुरमल देव धार्मिक नाट्य महोत्सव

थल/मुवानी। रामगंगा घाटी क्षेत्र के घसाड़ में आयोजित छुरमल देव धार्मिक नाट्य महोत्सव में स्थानीय कलाकारों ने खूब रंग जमाया। मुख्य अतिथि डीडीहाट क्षेत्र के विधायक विशन सिंह चुफाल, भगवान सिंह, समिति अध्यक्ष दीपक जोशी, देवेन्द्र जोशी आदि उपस्थित थे।

मुनस्यारी में शराब की दुकान का विरोध

मुनस्यारी। पर्यटन नगरी और आसपास शराब की दुकान खोलने के विरोध में मल्ला जोहार विकास समिति ने जोरदार प्रदर्शन किया। कहा कि यदि दुकान खुली तो अराजकता पढ़ेगी और पर्यटन कारोबार पर बुरा प्रभाव पड़ेगा।

उडियारी में शराब का भारी विरोध

बेरीनाग। उडियारी क्षेत्र में शराब की दुकान का भारी विरोध हो रहा है। प्रदर्शन कर रही महिलाओं को पूर्व विधायक नारायण राम और मीना गंगोला ने दुकान न खोलने का आश्वासन दिया है।

परिक्रमा

फचैऽक

पाखन में पाथर हरै गई, सिमेंटाक लेंटरों हैगै इफरात
उचेड़ि हाली बाखई बाखइ, लेंटर खिति हाली रातोंरात
लेंटर खिति हाली रातोंरात, पाथरोंकि खुपड़ि हिय्व भै
शान बणलि बिरादरी में, गौं गौं पन यसि बिकाव भै
दार पाथर गार माटै कुड़ि, आब गरीब गुर्बनाक रै गई
ह्यून चैमास में भाल हुंछी, पाखन में पाथर हरै गई ।

गणेश पाण्डेय

पुंगराऊं महोत्सव में कलाकारों की प्रस्तुति

थल। पुंगराऊ महोत्सव में कलाकारों की प्रस्तुति ने बांधे रखा। स्टार नाइट के लिये आमंत्रित कलाकारों के अलावा स्थानीय कलाकारों ने अपनी मंचीय प्रस्तुतियां दीं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। 10 वर्ष के बालक और बालिका वर्ग की दौड़ में दीपांशु पाण्डे और दिशा पाण्डे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस दौरान धारचूला विधायक हरीश धामी ने महोत्सव समिति को 51 हजार की राशि और कलाकारों को 25 हजार रुपये का इनाम देकर प्रोत्साहित किया। बेरीनाग नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष हेम पन्त, डीडीहाट नगर पालिका अध्यक्ष गिरीश चुफाल, नौलिंग महोत्सव के अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह मेहता, समिति के अध्यक्ष हरीश सिंह कार्की सहित तमाम लोग थे।

शीशमहल में पहली महिला रामलीला

हल्द्वानी। नैनीताल रोड स्थित शीशमहल रामलीला मैदान में पहली बार महिला रामलीला का भव्य मंचन हो रहा है। रामलीला कमेटी की अध्यक्ष तनुजा जोशी ने कहा कि रामलीला मंचन का उद्देश्य न केवल प्रभु राम की आदर्शन लीला का प्रदर्शन करना है बल्कि महिला सशक्तिकरण व सांस्कृतिक उत्थान का सन्देश देना है। रामलीला मंचन का शुभारम्भ नारद मोह से हुआ जिसमें महिलाओं ने उत्साह के साथ अपनी भूमिका निभाई। कमला जीना ने भगवान शिव, जय तिवारी व टीना जोशी ने जय-विजय, गीता नैनवाल ने नारद, भावना बोरा ने कामदेव और दीपा कोश्यारी ने रावण की भूमिका निभाई। रामलीला मंचन में महिलाओं द्वारा बेहद तनमयता के साथ मंचन किया जा रहा है, जिसकी चारों ओर सराहना हुई है।

दूसरी ओर पुनर्नवा महिला समिति की ओर से पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच में महिला रामलीला का मंचन हो रहा हे। कमेटी की अध्यक्ष लता बोरा के साथ पूरी टीम जुटी है।

जमरानी : टनल की खोदाई पूरी हुई

हल्द्वानी। बहुप्रतीक्षित जमरानी बांध परियोजना में डायवर्जन टनल-2 की 600 मीटर लम्बाई की खोदाई पूरी हुई। 8.10 मीटर व्यास वाली इस टनल का निर्माण कार्य फरवरी 2025 में शुरू हुआ था। परियोजना पूरी होने से क्षेत्र में सिंचाई, जल प्रबन्धन और समग्र विकास को बड़ा लाभ मिलेगा।

चैती मेला परिसर विकास को प्लान

काशीपुर। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बाल सुन्दरी देवी उज्जैनी शक्तिपीठ पर आयोजित भन संध्या में पधार कर कहा कि चैती मेले से प्राप्त होने वाली धन राशि से चैती मेला परिसर का विकास किया जायेगा। उन्होंने डीएम को इसके लिये मास्टर प्लान के निर्देश भी दिये।

सतचूली महोत्सव

लोहाघाट। खतेड़ा गांव में तीन दिवसीय सतचूली महोत्सव का जिला पंचायत अध्यक्ष आनन्द अधिकारी ने शुभारम्भ किया। भक्तजनों ने देवडांगरों का आशीर्वाद लिया।

चुनाव से पहले शिफ्ट होने लगे हैं नेतागण

कांग्रेस का पलड़ा भारी, हरदा को लेकर खचरबचर

पि.हि.प्रतिनिधि

2027 के चुनाव में अभी काफी समय है लेकिन महत्वाकांक्षी नेताओं की चाहत हिलोरे मार रही है और पार्टियां भी अपनी तैयारी में जुट गई हैं। उत्तराखण्ड की राजनीति में चुनाव से पहले नेतागण एक पार्टी से दूसरी में शिफ्ट होने लगे हैं। इससे साफ है कि इन नेताओं की कोई एक विचारधारा नहीं है और इन्हें जहाँ पर अपना लाभ दिखाई देता है, ये सब उस ओर हो जाते हैं। प्रदेश की राजनीति का पूरा हिसाब-किताब देखा जाए तो कांग्रेस का पलड़ा भारी दिखाई दे रहा है। सत्ता में होने के बावजूद भाजपा मौका तलाश की स्थिति में है। कैबिनेट में 5 नए मंत्री बनाने के बाद भी भाजपा अपने संगठन में क्या रणनीति बनाए इसको लेकर घिरी है क्योंकि पिछले दिनों में कुछ महिला नेताओं जो सोशल मीडिया पर अंकिता हत्याकाण्ड को लेकर जिस प्रकार से लगातार सुर्खियों में थी और अब भी यदा-कदा उनके तेवर दिखाई देते हैं, उसे लेकर भाजपा संगठन संभल कर चल रहा है। साथ ही भाजपा से नाराज होकर दमखम वाले नेताओं के कांग्रेस में जाने का परिणाम भी उसे भुगतना होगा। हालांकि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष महेन्द्र भट्ट कह रहे हैं- 'कांग्रेस ज्वाइन करने वालों को भाजपा ने पहले ही बाहर किया हुआ था।' साथ ही कह रहे हैं- 'कांग्रेस के कई बड़े नेता हमारे सम्पर्क में हैं।' इस बीच पूर्व कबीना मंत्री राजेन्द्र भण्डारी ने अलापा है कि उन्होंने पार्टी छोड़कर बहुत बड़ी गलती की, उन्हें पहले जनता के बीच जाना चाहिये था। इसी प्रकार से अटपट-चटपट बयानबाजियां अब 2027 चुनाव के टिकट वितरण तक सुनने और देखने को मिलेंगी। बयानबाजी में वादी-विवादी सारे दिखाई दे रहे हैं। यह भी सार्वजनिक है कि दुष्यन्त गौतम, महेन्द्र भट्ट जैसे नामों को उत्तराखण्ड का हर कोई बराबर सुन रहा है। विपक्ष तो इन नामों को लेकर तीखे आन्दोलन कर चुकी है। उर्मिला सनावर, आरती गौड़, उमेश कुमार, प्रणव चैम्पियन के बयानों के छौंके भी अचरज भरे होते हैं।

बात करें कांग्रेस में हाल-फिलहाल जाने वालों की तो पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल, पूर्व विधायक भीम लाल आर्य, पूर्व मेयर गौरव गोयल, नगर पालिकाध्यक्ष अनुज गुप्ता, पूर्व ब्लाक प्रमुख लाखन सिंह नेगी, पूर्व विधायक नारायण पाल हैं। कांग्रेस नेताओं को अपने में समेटते हुए ताकतवर बनने जा रही है लेकिन कुछ सीटों पर यूकेडी व तीन सीटों पर निर्दलीय का दबदबा होने का अनुमान है। पहाड़ के दिग्गज नेता काशीसिंह ऐरी को लेकर भी एकजुटता है। ऐसे में भाजपा को उखाड़ने का प्रण कर चुके विपक्षी एकता के लिये भी हाथपैर मार रहे हैं। यह साफ सी बात है कि यदि कांग्रेस के साथ अन्य भी चुनाव मैदान में होंगे तो भाजपा की राह आसान है। वैसे भी भाजपा की संगठन शक्ति व सत्ता की हवा का सीधा लाभ उसे है।

प्रदेश की राजनीति में बात गंगावली क्षेत्र की करें तो गंगोलीहाट-बेरीनाग विधान सभा सीट पर कांग्रेस की ओर से खजान गुड्डू लगभग प्रत्याशी माने जा रहे हैं जबकि मनोज कुमार की ओर से

विपक्षी एकता के लिये भी हाथपैर मार रहे हैं

काशीसिंह ऐरी को लेकर एकजुटता

रुद्रपुर में ठुकराल और शर्मा इधर-उधर

सितारगंज में नारायण पाल फिर से तैयार

भीमताल में कांग्रेस की बड़ी परीक्षा

गंगोलीहाट में भूपाल आर्या पर पार्टी नजरें

रुड़की में भाजपा को बड़ा झटका

हरदा को चुभ रहे हैं उन्हीं के सींचे

दिखाई गई ताकत को कमतर नहीं कह सकते हैं। भाजपा की ओर से टिकट की लाइन लग चुकी है। इस गणित में पूर्व विधायक पूर्व अफसर और विधायक से लेकर संगठन के युवा चेहरे शामिल हैं। यह भी सत्य है कि इस सीट पर भाजपा को चेहरा बदलने पर लाभ मिला है। ऐसे में सबसे शालीन नेता के रूप में भूपाल आर्या का नाम उभर रहा है। कहने को करम राम, फकीर राम, भीम कुमार, दिनेश कुमार, मीना गंगोला इस दौड़ में कोई कसर नहीं छोड़े वाले हैं लेकिन अनुसूचित मोर्चा के जिलाध्यक्ष व चार बार मण्डल उपाध्यक्ष, दो बार मण्डल महामंत्री, दो बार जिला मंत्री रह चुके भूपाल को पार्टी संगठन नजरअंदाज नहीं कर सकता है। ऐसे में टिकट के सभी दावेदार भी यह अनुमान लगा रहे हैं कि सामाजिक सरोकारों से जुड़े भूपाल किस करवट बैठेंगे।

तराई-भाबर की ओर नज़र दौड़ाएं तो रुद्रपुर विधानसभा सीट में घमासान अभी से मच चुकी है। भाजपा के पूर्व विधायक राजकुमार ठुकराल कांग्रेसी बनने के बाद से खुलकर चुनौती दे रहे हैं। वर्तमान विधायक शिव अरोरा जहाँ पूरी तरह हिन्दूवादी छवि के साथ हर प्रकार से अपने को स्थापित करने की तैयारी में हैं वहीं राजकुमार ठुकराल पुराने अनुभवों और भाजपा के साथ उनकी खटास के कारण पूरी तैयारी में हैं। ठुकराल के कांग्रेस में आने पर पूर्व मेयर मीना शर्मा ने कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि ठुकराल के साथ इनके विचार एकदम नहीं मिलते हैं। तराई में काशीपुर, किच्छा, बाजपुर सीटों पर माहौल बनने के साथ ही सम्भावित उम्मीदवारों की चर्चा होने लगी है। गदरपुर में विधायक अरविन्द पाण्डे को लेकर राजनीति चक्र घूम रहा है। आने वाले दिनों में कौन किस करवट बैठेगा वह समय बता देगा। इसी प्रकार अति महत्वाकांक्षी और धन बल में आगे नारायण पाल सितारगंज से तैयारी कर रहे हैं। पूरी तरह कांग्रेसी और फिर मौका देखते हुए बसपा में जाने वाले नारायण पाल इस बार पूरे जोश में हैं। वह पुराने अनुभव के साथ लोगों के बीच अपनी सक्रियता बनाए हुए हैं। ऐसे में तय है कि भाजपा के सौरभ बहुगुणा के सामने कांग्रेस इन्हें चुनाव मैदान में उतारेगी। भाजपा छोड़ कांग्रेम में पूर्व मेयर गौरव गोयल के शामिल होते ही रुड़की सीट का गणित बदलता दिखाई दे रहा है। उनके समर्थन में दल बल जुटा है।

इतना सबकुछ होने के बाद कांग्रेस के शीर्ष नेता हरीश रावत को सोचना और सहना पड़ रहा है क्योंकि जिस प्रकार रामनगर के पूर्व ब्लाक प्रमुख संजय नेगी को लेकर हरदा और रणजीत सिंह रावत के बीच एकमत नहीं है वह रामनगर सीट सहित आसपास खटास पैदा कर रहा है। यह सच सभी को पता है कि हरदा को उन्हीं के सींचे चुभ रहे हैं। जो रणजीत सिंह कभी हरदा के दाएं हाथ थे और इनकी दमदम चलती थी, पिछले सालों से विचार नहीं मिल रहे। बड़ी चर्चा हो रही कि कांग्रेस पार्टी में आगे क्या जो होने वाला है। इधर पार्टियों की हल्द्वानी के लिये रणनीति भी जोर मारने लगी है और आने वाले दिनों में उथल-पुथल होगी। कालाढूंगी, लालकुआ सीट के प्रत्याशियों का टिकट भी हल्द्वानी सीट के साथ प्रभावित होगा। विपक्ष में मजबूत के दाबे अपनी जगह हैं लेकिन हरीश रावत 'हरदा' को लेकर हो रही खचरबचर कोई तो रंग जरूर दिखाएगी। नेताओं के बीच चल रहे इस गुणा-भाग में घटनाक्रम अभी बहुत बदलेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

तत् त्वमसि के.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

थे। शुन:शेप अयोध्या में रहे तो दीर्घतमा वैशाली के थे। यानी की शुरू के एक हजार साल तक मन्त्र पूर्वांचल में ही लिखे जाते रहे, फिर इस विद्या का प्रसार पश्चिम और दक्षिण में हुआ। इस बार जब अध्यात्म सम्वादों की लहर चली तो इसका एक बड़ा केन्द्र बना मिथिला (वही पूर्वांचल) जिसके नरेश महावशी जनक खुद बड़े ब्रह्मवेत्ता थे और अपनी जिस राजसभा में वे अध्यात्म सम्वाद चलाया करते थे, इसी में यज्ञवल्क्य, उद्दालक, कहोल सहश तमाम विचारकोंने हिस्सा लिया था। पर चूँकि महाभारत संग्राम कुरुक्षेत्र में भारत के पश्चिमी हिस्से में लड़ा गया था, इसलिए अगर नए विचारों के प्रवर्तकों की एक लम्बी श्रृंखला हमें कुरु-पंचाल (कुरुक्षेत्र के आसपास के) इलाके में विकसित होती मिलती है तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसी इलाके में हुए थे यज्ञवल्क्य जिन्होंने त्यागपूर्वक भाग का विचार फैलाया तो उन्हीं के समकालीन थे उद्दालक आरुणि जिन्होंने देश को वह महावाक्य दिया जो आज तक हमारी दार्शनिक निधि का बेसिक विचार बना हुआ है। वाक्य है- तत्वमसि यानी तुम (त्वम्) वही (तत्) हो (असि) तुम स्वयं ही ब्रह्म हो, परमात्मा हो, ईश्वर हो।

उद्दालक ने यह विचार अपने पुत्र श्वेतकेतु के दिमाग में आरोपित किया था। कहते हैं, श्वेतकेतु को विद्याप्राप्ति के बाद काफी घमण्ड हो गया था। उद्दालक को यह देखकर चिन्ता हुई कि एक तो यह बालक बहुत देर से पढ़ना शुरू हुआ था और पढ़ लिया गया तो बजाए विनम्र होने के उसे अहंकार हो गया। सो अपने पुत्र के घमण्ड को तोड़ने के लिए उद्दालक ने उससे आध्यात्मिक विषयों पर बातचीत करेन का फैसला किया। उसने श्वेतकेतु से कई गहरे सवाल किए जिनका जवाब वह नहीं दे सका। जब श्वेतकेतु को अपने ज्ञान की सीमाओं का अहसास हो गया तो उद्दालक को लगा कि अब उसे ब्रह्मज्ञान देना चाहिए और ब्रह्म, आत्मा और उनकी एकात्मता का पूरा चित्र समझाकर उद्दालक ने उसे अन्त में एक ही वाक्य में समझा दिया- तत्वमसि श्वेतकेतो, हे श्वेतकेतु तुम वही हो, तुम स्वयं वही ब्रह्म हो जिस पर तुम इस समय मुझसे बात कर रहे हो।

तो कौन थे उद्दालक आरुणि? आरुणि से जाहिर है कि वे अरुण नामक व्यक्ति के पुत्र थे और उनका अपना नाम था उद्दालक। कुछ शोधकर्ता हमें समझाने का प्रयास करते है। अरुण के पुत्र उद्दालक उस व्यक्ति से पृथक हैं जो सिर्फ उद्दालक थे। पर इस भ्रान्ति को सही मानने के लिए कोई संकेत हमें पूरे भारतीय साहित्य में नहीं मिलता। ये आरुणि वही हैं जिनके जीवन की एक घटना को देश के हर बच्चे को कभी स्कूली शिक्षा में ही बता दिया जाता था। एक आचार्य थे धौम्य। भारी बारिश में डूबी एक रात को उन्होंने अपने एक शिष्य से कहा कि जिस नाली के टूटने से बारिश के पानी के पूरे आश्रम में आ आने का खतरा हैउस नाली को वह किसी भी तरह से बाँधने की कोशिश करे। उस शिष्य ने खूब कोशिश की और पानी नहीं रुका तो वह खुद ही नाली के मुहाने पर लेट गया, पानी बहकर दूसरी ओर जाता रहा और आश्रम में अवांछित पानी नहीं भर पाया। यही आरुणि था। अपने इस शिष्य को आरुणि, आरुणि कहते हुए गुरु धौम्य जब सुबह ढूँढने आए उसे पानी रोकने की मुद्रा में लेटे हुए देखा तो खुशी के मारे कहने लगे, उद्दालक, उद्दालक। और आरुणि तब से उद्दालक हुए।

तो क्या अर्थ हुआ उद्दालक का? नहीं मालूम। संस्कृत के किसी रूप से उसका उद्भव समझ नहीं आता। लगता है कि जिस धैर्य और सहनशक्ति के सहारे आरुणि ने आश्रम को बचाया, वह आश्रम का उद्धारक माना गया और इस उद्धारक शब्द को ही तब की प्रचलित बोली के आधार पर उद्दालक कहकर धौम्य ने आरुणि को नाम दे दिया- उद्दालक आरुणि।

उद्दालक आरुणि का पूर कुनबा ही दार्शनिकों का था। स्वयं दार्शनिक, जिसने तत्वमसि नामक महावाक्य इस देश को दिया। इसका विता अरुण औपवेशि गौतम भी तब के विचारकों में से एक। उद्दालक के दो पुत्र- श्वेतकेतु और नचिकेता जो विद्वत्ता और ख्याति में अपने पिता से भी चार कदम आगे चले गए थे। इसकी बेटी सुजाता का विवाह कहोल से हुआ, वही कहोल जिसने जनक की ब्रह्मसभा में याज्ञवल्क्य से भारी बहस की थी। उद्दालक का दौहित्र था अष्टावक्र यानी सुजाता और कहोल का पुत्र, जिसने अपनी प्रतिभा का सिक्का उसी जनक की ब्रह्मसभा में जमाया।

उद्दालक ने 'तत्वमसि' क्या कहा, यह महावाक्य आने वाली सदियों और सहस्त्रादियों में भारत की हर विचारधारा का महावाक्य बन गया। बौद्ध लोग उसी अपने किसी विराट रूप में निर्वाण की चाह रखने लगे तो जैनों का णमोकार मन्त्र उसी तत्व की चाह पैदा करने लगा। वेदान्त ने उसे अद्वैत नाम दे दिया तो भक्ति आन्दोलन ने इसी से प्रेरणा पाकर ईश्वर के साथ सायुज्य, सारूप्य जैसे कई तरह के मिलन की कल्पना की। सांसारिक, धरातल पर दो प्रेमियों ने जब एक दूसरे से मिलने और एक दूसरे में समा जाने की बेताबी दिखाई तो सूफियों ने उसे इश्क कह दिया और सांसारिक प्रेम को दिव्य आकार दे दिया। सबके मूल में मूल तत्व वही है- 'तत्वमसि, मुझमें और उसमें कोई फर्क नहीं, (दर्शन की भाषा में) आत्मा और परमात्मा में कोई फर्क नहीं, (पेम की भाषा में) तुझमें और मुझमें कोई फर्क नहीं, हम दोनों एक हैं। मीरा का कृष्ण में समा जाना इसी तत्वमसि का भक्ति रूपान्तर था। उद्दालक भी शायद नहीं जानते होंगे कि उनका महावाक्य इतना असर इस देश की विचारधाराओं पर डालेगा।

(साभार नवभारत टाइम्स)

उत्तराखण्ड भाषा संस्थान का सम्मान समारोह

देहरादून। उत्तराखण्ड भाषा संस्थान का सम्मान समारोह विगत दिवस सम्पन्न हुआ। मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने यिह सम्मान प्रदान करने के साथ ही अपना सम्बोधन में कहा कि रचनाकार प्रदेश की सांस्कृतिक व धार्मिक पहचान को देश-विदेश तक पहुंचाएं। साहित्य धरोहर व बोली-भाषाओं के संरक्षण को सरकार प्रतिबद्ध है। कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि भाषा संस्थान विभिन्न योजनाओं के माध्यम से भाषा के उन्नयन का कार्य कर रहा हे। भाषा मंत्री खजान दास ने कहा कि प्रदेश की बोली-भाषा के सम्बर्द्धन व विकास को निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं।

इस अवसर पर कथाकार डॉ.जितेन ठाकुर को उत्तराखण्ड साहित्य भूषण सम्मान दिया गया। बुद्धिनाथ मिश्र समेत 5 वरिष्ठ साहित्यकारों को उत्तराखण्ड दीर्घकालीन उत्कृष्ट साहित्य सृजन पुरस्कार दिए गए। इनमें श्याम सिंह कुटौला, डॉ. प्रीतम सिंह, केसर सिंह राणा और अताए साबिर अफजल मंगलौरी हैं। समारोह में डॉ. दिवा भट्ट को उत्तराखण्ड साहित्य नारी वन्दन सम्मान, प्रो.दिनेश चमोला को बाल साहित्य लेखन पुरस्कार, डॉ. सुधा जुगरान, भूपेन्द्र बिष्ट, शीशपाल गुंसाई, तारा पाठक, हेमन्त सिंह बिष्ट, गजेन्द्र नौटियाल, ओम बधाणी व सचिन चौहान को उत्तराखण्ड मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार, नीरज पन्त को साहित्यिक पत्र-पत्रिका लेखन पुरस्कार, अनिल कार्की राजेन्द्र ढेला व अनोज सिंह बनाली को नवोदित साहित्य उदीयमान सम्मान से पुरस्कृत किया गया।

चोरगलिया में वन विभाग ने चालीस साल पुराना अतिक्रमण हटाया

हल्द्वानी। लाखन मण्डी ग्रामसभा के दुबेलबेरा गाँव में वनि विभाग की टीम ने चालीस साल पुरान अतिक्रमण हटाया। बताया जाता है कि हरिश्चन्द्र पोखरिया का परिवार पिछले चार दशकों से पशुपालन और मजदूरी कर यहाँ जीवनयापन कर रहा था, जबकि वन विभाग इस भूमि को अतिक्रमण बता रहा था। इससे पहले 7 अगस्त 2025 को भी एसडीओ गणेश जोशी के नेतृत्व में टीम अतिक्रमण हटाने पहुंची थी लेकिन ग्रामीणों के विरोध के कारण कार्रवाई नहीं हो सकी। हाईकोर्ट के आदेश के बाद अब एसडीओ गणेश जोशी, रेंजस एल.एस.मर्तोलिया, जौलशाल रेंज के अधिकारी, पुलिस विभाग के सीओ लालकुआ तथा चोरगलिया थाना पुलिस सहित वन विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम ने अतिक्रमण स्थल से 500 मीटर पहले ही पुलिस बल तैनात करते हुए इसे हटा दिया।

चम्पावत तक सेंध लगाते नेतागण

अरविन्द पाण्डे के तेवर बहुत कुछ कह रहे हैं

उत्तराखण्ड की राजनीति में तीखे होते नेताओं को लेकर तमाम चर्चाएं होने लगी हैं। गदरपुर के विधायक अरविन्द पाण्डे के तेवर बहुत कुछ कह रहे हैं। सीएम पुष्कर सिंह धामी के विधानसभा क्षेत्र चम्पावत में पूर्णागिरी दर्शन के बहाने पहुंचे श्री पाण्डे का जर्बदस्त स्वागत हुआ। इससे पहले पाण्डे के साथ उन लोगों को नजदीगी दिखाई दी जो भाजपा से कटे हैं या संगठन से बाहर हैं। बताते चलें कि बाजपुर-गदरपुर के दबंग नेताओं की गिनती में एक अरविन्द पाण्डे सीएम धामी को लेकर तीखी बात करते रहे हैं और त्रिवेन्द्र रावत के गुट के माने जाते हैं। कुछ समय पहले किसी भूमि वाले मामले में भी वह घिरे तो खुलकर बोलने लगे थे। कांग्रेस विधायक तिलकराज बेहड़ के साथ भी उनकी मुलाकात हो चुकी है। उनकी चाल से बराबर कहा जा रहा है कि वह कांग्रेसी हो जाएंगे। राजनीति हर आने वाले दिनों में क्या होगा यह कहना कठिन है लेकिन किस नेता की किसके प्रति नाराजगी है वह तो साफ दिखाई देती है। कांग्रेस में घमासान मचा है लेकिन पार्टी के बनते समीकरणों में अरविन्द पाण्डे जैसे नेता कूद पड़ें तो आश्चर्य की बात नहीं है। तराई की सीटों पर इस तरह के समीकरण बनते दिखाई दे रहे हैं जब नये-पुराने चेहरे आने वाले दिनों में अपनी जगह बदलेंगे और विरोध के सुर भी तेज होंगे।

भागीचौरा-हंसेश्वर सड़क से होगी सुविधा

जौलजीवी। भागीचौरा-हंसेश्वर सड़क पर यातायात सुगम बनाने के लिए कार्य किया जा रहा है। इससे दो दर्जन से अधिक ग्रामों को फायदा होगा। पहले यह सड़क लोनिवि के पास थी। कुछ समय पहले इसे पीएमजीएसवाई को हस्तान्तरित किया गया है। अवर अभियन्ता आनन्द प्रकाश ने बताया कि गर्खा इण्टर कालेज से लेकर हंसेश्वर तक 16 किमी सड़क कार्य 12.93 करोड़ रुपये से किया जा रहा है।

नैनीताल में ठेकेदारी पर टोल टैक्स वसूली होगी

नैनीताल। हाईकोर्ट ने पर्यावरणविद् प्रोफेसर अजय रावत की जनहित याचिका पर सुनवाई के बाद आदेश किया है कि बारापत्थर, फांसी गधेरा और लेक ब्रिज चुंगी से टोल टैक्स वसूली ठेके के माध्यम से होगी। पालिका ने प्रार्थना पत्र देकर अदालत में कहा था कि उनके पास संसाधनों की कमी है।

ओक हिल रिसॉर्ट मुनस्यारी
फ्री पार्किंग उपलब्ध, सुरक्षित पार्किंग सुविधा, वाइफाई सुविधा, फ्री ब्रकफास्ट, रेस्तरां, पालतू जानवरों को अनुमति (डॉग/पेट फ्रेंटली), 24 घण्टे सुरक्षा व्यवस्था, 24 घण्टे चेक-इन की सुविधा।
सुरिंग, मुनस्यारी तेज-पार्वती होम स्टे

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

अपने आप से घिर चुके हैं हरदा

हमेशा विरोध की राजनीति में रहने के बाद अब चिंतन

उत्तराखण्ड की राजनजीति में जबर्दस्त हलचल मची हुई है। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत अपने आप से घिर चुके हैं। कद्दावर नेता हरदा हमेशा अपनी ही पार्टी में विरोध की राजनीति करते-करते अब जीवन के उत्तरार्द्ध में चिन्तन करने लगे हैं। इन दिनों कांग्रेस प्रदेश में ताकत के साथ दिखाई दे रही है लेकिन हरदा के लिये बहुत असमंजस की स्थिति है। वह एकान्त होकर छुट्टी में जाने की बात कह रहे हैं और जानते हैं कि पार्टी में कई नेता धुंआधार चल रहे हैं। कांग्रेस छोड़ दूसरी पार्टी में जाना भी हरदा के लिये असजकारी ही है। क्योंकि कांग्रेस का पक्का सिपाही होने का दावा करने वाले हरदा का कद सबको पता है कि

उभर चुके हैं कई नेता

वह उत्तराखण्ड की राजनीति में सबसे अनुभवी खिलाड़ी हैं। यह भी विदित है कि एन.डी.तिवारी के साथ उनकी कभी नहीं बनी और तिवारी के रहते वह जगह पाने में असफल होने पर कोई न कोई चाल चलते रहे। डॉ.इन्दिरा हृदयेश भी तिवारी गुट की होने के कारण इनसे अलग थीं। मुख्यमंत्री बनने में कामयाब होने के बाद हरदा ने अपनी ताकत दिखानी चाही लेकिन कांग्रेसी दिग्गजों ने एकसाथ पार्टी छोड़कर भाजपा की सरकार बनाई और अपना मंत्री बन बैठे। इसके बाद हरदा ने पार्टी के लिये बहुत मेहनत की लेकिन मोदी लहर में कांग्रेस काफी पीछे रह गई। फिर आगे के सफर में हरदा के खासमखास रणजीत सिंह रावत उनसे एकदम उलट हो गये जो आज तक भी वैसे ही हैं। पार्टी के अन्य नेता भी हरदा से उचाट रहे। इसे प्रदेश के सबसे पुराने नेता का भाग्य ही कहा जायेगा। अब उम्र के इस पड़ाव में हरदा बहुत चबाचबा कर बयान दे रहे हैं। जब कई नेता कांग्रेस में शामिल हुए तब रामनगर के युवा नेता संजय नेगी को शामिल न करा पाने का रोष उनमें हैं। यहीं से पार्टी दबी धड़ेबाजी उभर चुकी है। इस बीच गोविन्द कुन्जवाल, प्रदीप टम्टा, प्रकाश जोशी, रणजीत रावत, हरीश धामी, हरक सिंह सभी के बयानों से राजनीतिक हवाएं तेज हैं।

जोहार सहयोग निधि स्वायत्त सहकारिता

नजदीक सुमित्रा नन्दन पार्क, केमू स्टेशन, माल रोड, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

जसुली बूढ़ी लला सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति (रजि०)

वार्षिकोत्सव

दानवीरांगना जसुली बूढ़ी लला सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक 18-19 अप्रैल 2026 को लला जसुली बूढ़ी धर्मशाला सतगढ़, कनालीछीना (पिथौरागढ़) में किया जा रहा है। इस पावन अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।

-कार्यक्रम-

बुधवार 18 अप्रैल 2026- सायंकाल सिंमी तंब्वल पूजा-पाठ

वृहस्पतिवार 19 अप्रैल 2026- प्रात: 10.30 बजे से सम्मान समारोह एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, विचार-विमश

-निवेदक-

जसुली बूढ़ी लला सोक्यानी धर्मशाला जीर्णोद्धार एवं प्रबन्धन समिति

Hotel Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे

धरमघर/चौकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा Thats मो. 9458920379

APNA GHAR 6396098804

चौकोड़ी

HOTEL RESTRO BANQUET

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)